SNEH TEACHERS TRAINING COLLEGE, JAIPUR
"Foster Emotional Intelligence in Youth Through Education" (ICFEIYE-2024)
DATE: 15 April 2024
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Indexed, Double-Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal, Impact factor (SJIF) = 7.938

शिक्षण पद्धतियों की प्रभावी षिक्षण में भूमिका

ज्योति अरोड़ा, शोधार्थी, वनस्थली विद्यापीठ, निवाई, टौंक
डॉ. सपना वर्मा, शोध निर्देषिका, वनस्थली विद्यापीठ, निवाई, टौंक
Mail ID – khatrijti@gmail.com

परम्परागत अर्थो में षिक्षण एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा सीखने वाले को निर्धारित विषयों में पूर्ण ज्ञान प्राप्त करने के लिये कुछ ज्ञान व कुषलतायें प्रदान की जाती है। इसी धारणा में षिक्षक व छात्र की सफलता इस तथ्य से मापी जाती है कि विषय वस्तु के बारे में षिक्षक द्वारा पूछे गये प्रष्नों का उत्तर देने की छात्रों में कितनी योग्यता है। यह विचारधारा षिक्षण को केवल ज्ञान प्रदान करने का साधन मानती है जबकि वास्तव में देखा जाये तो षिक्षण एक सामाजिक प्रक्रिया है जिस पर समाज, शासन प्रणाली, दार्षनिक विचारधारा, मूल्य व संस्कृति का प्रभाव पड़ता रहता है। इसी कारण षिक्षण केवल छात्र को उत्तर देने योग्य बनाने तक ही सीमित नहीं अपितु षिक्षण सीखने के तीनों स्तरों की सफलता पर आधारित है जिसमें छात्र ज्ञान स्तर, बोद्ध स्तर तथा चिन्तन स्तर पर स्वयं को सफल साबित कर सके। इस उद्देष्य की प्राप्ति हेतु षिक्षण के परम्परागत ढांचे से आगे बढ़कर आधुनिक मांग को देखते हुये षिक्षण में नवीन विधियों व प्रविधियों के समावेष की आवष्यकता है।

iajesm
Quality Of Work... Never Ended...